कक्षा : 9 **विषय : हिन्दी**

मॉड्यूल–1

अपठित बोध

अपठित गद्यांश

जिस गद्यांश का पूर्व अध्ययन न किया गया हो, वह अपठित गद्यांश कहलाता है । अपठित गद्यांश पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों में से नहीं पूछा जाता ।

उद्देश्य –

- इसका अभ्यास करने से विद्यार्थी की स्वतंत्र अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है ।
- इससे भाषा की समझ और वैचारिक शक्ति का विकास होता है ।
- पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त साहित्य में रुचि जागृत करने , बौद्धिक क्षमता के विकास तथा विषय ग्रहण की क्षमता के विकास हेतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण है ।

ध्यान रखने योग्य बातें –

- सर्वप्रथम गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
- गद्यांश के मूल भाव को समझने की कोशिश करें ।
- प्रदत्त प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
- प्रश्न पढ़ने के उपरांत पुनः गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें संभावित उत्तर को रेखांकित कर दें ।
- सटीक उत्तर हेतु गद्यांश को गहराई से समझना आवश्यक है ।
- शीर्षक का चुनाव, विषयवस्तु का बोध, और भाषिक विशेषताओं आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं ।
- शीर्षक निर्धारण एवं प्रश्नों के उत्तर देते समय सटीकता, सरलता, तथा संक्षिप्तता का विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

लक्ष्य प्राप्ति में यह आवश्यक है कि आप अपनी शारीरिक और बौद्धिक शक्तियों का अधिकतम प्रयोग करें। दूसरों के सहारे बैठने वाले कभी सफल नहीं होते। आजकल के नौजवान सदा दूसरों का मुँह ताका करते हैं या समय या भाग्य को कोसा करते हैं। उचित अवसर की तलाश व्यक्ति को करनी पड़ती है,फिर अपने विवेक,संयम और परिश्रम से दृढ़ संकल्प हो आगे बढ़े तो लक्ष्य स्वयं ही आपकी ओर बढ़ेगा। कुछ लोग तो सदा ही समाज और समय से नाराज़ रहते हैं। वे परिस्थितियों के प्रतिकूल होने की आड़ में अपने आलस्य को ओढ़े रहते हैं। छात्रावस्था में व्यावहारिकता का अभाव अक्सर देखा जाता है। ऐसे में

अनुभवशील व्यक्तियों के अनुभवों का लाभ उठाकर आगे बढ़ने में समझदारी है।

क. लक्ष्य प्राप्ति के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात क्या है?	2
ख . आजकल के युवकों की क्या विशेषता है ?	2
ग. . लक्ष्य प्राप्ति के लिए किन गुणों की आवश्यकता है?	2
घ. .छात्रावस्था मे छात्रों को आगे बढ़ने के लिए क्या करना चाहिए ?	1
ङ. 'शारीरिक' शब्द से प्रत्यय अलग कीजिए ।	1

अभ्यास के लिए गद्यांश –

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए –

यह एक सर्वविदित सत्य है कि मानवीय गुणों का सर्वाधिक विकास विपरीत परिस्थितियों में ही होता है । जीवन में सर्वत्र इस सत्य के उदाहरण भरे हुए हैं । कष्ट और पीड़ा आंतरिक वृत्तियों के परिशोधन के साथ ही एक ऐसी आंतरिक दृढ़ता को जन्म देते हैं जो मनुष्य को तप्त स्वर्ण की भाँति खरा बननता है । विपत्तियों के पहाड़ से टकराकर उसका बल बढ़ता है । हृदय में ऐसी अद्‌भुत वृत्ति का जन्म होता है कि एक बार कष्टों जूझकर फिर वह उनको खेल समझने लगता है । उसके हृदय में विपत्तियों को ठोकर मारकर अपना मार्ग बना लेने की वीरता उत्पन्न हो जाती है । मन की भाँति ही ही शरीर की दृढ़ता शारीरिक श्रम से आती है । शारीरिक परिश्रम उसके शरीर को बलिष्ठ बनाता है । विपत्तियों में तपकर दृढ़ हुए शरीर की भाँति परिश्रम की अग्नि में तपकर शरीर का लौह स्पात बन जाता है । जब एक शायर ने कहा कि ' मुश्किलें इतनी पड़ीं मुझपर की आसाँ हो गई ' तो वह इस सत्य से परिचित था । चारित्रिक दृढ़ता के लिए जो कार्य कष्टों का आधिक्य करता है , शारीरिक दृढ़ता के लिए वही कार्य श्रम करता है । दोनों ही ऐसे हथौड़े हैं जो पीट–पीटकर शरीर और मन में इस्पाती दृढ़ता को जन्म देती हैं ।

क. विपरीत परिस्थितियाँ किसका कारण हैं ?	2
ख. मनुष्य को सौने जैसा शुद्ध बनाने मे क्या सहायक है ?	2
ग. विपत्तियों के बीच अपना अपना मार्ग बना लेने की क्षमता कब उत्पन्न होती है ?	2
घ. विपत्तियों में तपकर दृढ़ हुए शरीर की भाँति परिश्रम की अग्नि में तपकर शरीर कैसा बन जाता है ?	1
ङ. मन की भाँति ही शरीर की दृढ़ता किसके द्वारा आती है ?	1

कक्षा : 9 **विषय : हिन्दी**

मॉड्यूल–1

अपठित बोध

अपठित काव्यांश

जिस काव्यांश का पूर्व अध्ययन न किया गया हो, वह अपठित काव्यांश कहलाता है । अपठित काव्यांश पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों में से नहीं पूछा जाता ।

उद्देश्य –

- अपठित काव्यांश विद्यार्थियों की बोध, विषयग्रहण तथा भावानुभूति की क्षमता के विकास हेतु आवश्यक है।
- इसका अभ्यास करने से विद्यार्थी की स्वतंत्र अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है ।
- इससे भाषा की समझ और वैचारिक शक्ति का विकास होता है ।
- पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त साहित्य में रुचि जागृत करने , बौद्धिक क्षमता के विकास तथा भाव ग्रहण की क्षमता के विकास हेतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण है ।

ध्यान रखने योग्य बातें –

- सर्वप्रथम काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
- काव्यांश के मूल भाव को समझने की कोशिश करें ।
- प्रदत्त प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
- प्रश्न पढ़ने के उपरांत पुनः काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें व संभावित उत्तर को रेखांकित कर दें ।
- प्रश्नों का उत्तर काव्यांश की भाषा में न होकर अपनी भाषा में होना चाहिए ।
- सटीक उत्तर हेतु काव्यांश की भावाभिव्यंजना तथा मूल अर्थ दोनों को भली प्रकार समझना आवश्यक है।
- शीर्षक निर्धारण एवं प्रश्नों के उत्तर देते समय सटीकता, सरलता, तथा संक्षिप्तता का विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

प्रश्न2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए –

जन्म दिया माता –सा जिसने , किया सदा लालन –पालन ,
जिसके मिट्टी – जल से ही है रचा गया हम सबका तन ।
गिरिवर नित रक्षा करते हैं , उच्च उठा के श्रंग महान ,
जिसके लता द्रुमादिक करते हमको अपनी छाया दान ।
माता केवल बाल–काल में निज अंक में धरती है ,

हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन–पोषण करती है ।
मातृभूमि करती है सबका लालन सदा मृत्यु पर्यंत ,
जिसके दया प्रवाहों का होता न कभी सपने में अंत ।
मर जाने पर कण देहों के इसमें ही मिल जाते हैं ,
हिन्दू जलते , यवन – ईसाई शरण इसी में पाते हैं ।
ऐसी मातृभूमि मेरी है स्वर्गलोक से भी प्यारी ,
इसके चरण – कमल पर मेरा तन–मन–धन सब बलिहारी ।।

क. गिरिवर हमारी रक्षा किस प्रकार करते हैं ? 2
ख. कवि की मातृभूमि पर क्या न्योछावर करने की इच्छा है ? 2
ग. ' जन्म दिया माता –सा जिसने ' यहाँ जिसने से क्या तात्पर्य है ? 1
घ. मातृभूमि माँ से भी बढ़कर क्यों है ? 1
ङ. चरण – कमल का क्या अर्थ है ? 1

अभ्यास के लिए काव्यांश –

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प को चुनिए :

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से, थी अभी इक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर–फिर यही जी में लगी, आह, क्यों घर छोड़ कर मैं यों बढ़ी।
दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा , मैं बचूँगी ,या मिलूँगी धूल में।
जल उठूँगी , गिर अंगारे पर किसी, चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।
बह उठी उस काल इक ऐसी हवा , वह समुंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला, वह उसी में जा गिरी मोती बनी।
लोग अकसर हैं झिझकते –सोचते , जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर,
बूँद लौ कुछ और ही देता है कर।

1. बँद कहाँ से निकली थी ? 1
2. '' दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा'' ऐसा कौन सोचने लगा ? 1
3. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक क्या है ? 1
4. लोग कब झिझकते और सोचते हैं ? 2
5.बूँद मोती के रूप में कैसे बदल गई ? 2

कक्षा : 9 **विषय : हिन्दी**

मॉड्यूल–1
पत्र–लेखन

पत्र–लेखन एक कला है। अपने से दूर रह रहे संबंधी तथा मित्रों से बातचीत करने का सुगम तथा सस्ता साधन है। कभी–कभी सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों से भी हमें काम पड़ता है। ऐसे में आज के युग में भी पत्रों की प्रासंगिकता बनी हुई है। पत्र लिखते समय भाषा तथा भाव स्पष्ट होने चाहिए।

अच्छे पत्र की विशेषताएँ –

- **सरलता –** पत्र की भाषा सरल, तथा स्वाभाविक होनी चाहिए।
- **स्पष्टता** – पत्र की भाषा में स्पष्टता होनी चाहिए। स्पष्ट तथा मधुर भाषा वाला पत्र प्रभावी होता है।
- **संक्षिप्तता** – पत्र की भाषा में संक्षिप्तता होनी चाहिए। व्यर्थ के शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- **प्रभावशाली शैली** – पत्र की शैली ऐसी हो, जिससे पाठक प्रभावित हों। वाक्यों का नियोजन, शब्दों का प्रयोग तथा मुहावरों का प्रयोग अच्छी भाषा के आवश्यक गुण हैं।
- **पूर्णता** – पत्र अपने कथन में पूर्ण होना चाहिए। जिस उद्देश्य से लिखा जाए, उसकी पूर्ति होनी चाहिए।

पत्रों के प्रकार

औपचारिक पत्र	अनौपचारिक पत्र
• प्रार्थना –पत्र • आवेदन –पत्र • शिकायती –पत्र इत्यादि	• सगे – संबंधियों एवं मित्रों को लिखे जाने वाले पत्र • बधाई –पत्र • शुभकामना–पत्र • धन्यवाद–पत्र • निमंत्रण–पत्र इत्यादि

1.आप केंद्रीय विद्यालय, आर. के. पुरम, नई दिल्ली के विद्यार्थी हैं। आपका नाम राकेश है। आप अपने प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु पत्र लिखिए।

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,
केंद्रीय विद्यालय,
आर. के. पुरम,
नई दिल्ली ।
दिनांक – 23 अप्रैल 20.....
विषय – आर्थिक सहायता प्राप्त करने के संबंध में ।
महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में नौवीं 'अ' का छात्र हूँ। प्रतिवर्ष की भाँति मैं आठवीं कक्षा में भी 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर कक्षा में प्रथम आया हूँ। अध्ययन कार्य के साथ–साथ मैंने खेल–कूद प्रतियोगिताओं में भाग लेकर कई पुरस्कार जीते हैं ।

मान्यवर, इस वर्ष मेरे पिताजी के असामयिक निधन के कारण घर की आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो गई है। छोटी बहन की पढ़ाई व माताजी की बीमारी पर अत्यधिक धन खर्च हो रहा है, जिसे वहन करने में कठिनाई हो रही है। इन्हीं सब कारणों से मुझे अपनी पढ़ाई पर होने वाले खर्च को वहन करने में कठिनाई उत्पन्न हो रही है।

अतः आपसे निवेदन है कि मुझे 500/रुपए मासिक आर्थिक सहायता प्रदान करने की कृपा करें, ताकि मेरी पढ़ाई अबाध रूप से चलती रहे। इस सहयोग और कृपा के लिए मैं सदा आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
नौवीं 'अ'

1. **आपका मित्र राजेश वाद–विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आया है। अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अपने मित्र को बधाई–पत्र लिखिए।**

परीक्षा भवन,
अ ब स विद्यालय
नई दिल्ली
दिनांक–23 अप्रैल 20....

प्रिय मित्र राजेश,
सप्रेम नमस्ते ।
आज प्रातः दूरदर्शन पर शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित प्रतियोगिता का सीधा प्रसारण देखने को मिला, जिसमें पूरी दिल्ली के विद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। सभी वक्ताओं ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए। अचानक तुम्हें इस प्रतियोगिता में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए देखा तो खुशी का ठिकाना न रहा। प्रवाहपूर्ण भाषा–शैली और धारा प्रवाह विचार प्रकट करते हुए तुम्हारे मुख की लालिमा देखते ही बनती थी। अंत में यह सुनकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा कि तुम्हें सर्वश्रेष्ठ वक्ता होने का सम्मान प्राप्त हुआ।
इस शुभ अवसर पर मैं तुम्हें अपने समस्त परिवार की ओर से बधाई देता हूँ।
तुम्हारा मित्र
अ ब स

अभ्यास के लिए पत्र–

1. गत कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बढ़ने लगे हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए ।
2. आप वार्षिक परीक्षा दे चुके हैं। अपने पिताजी को पत्र लिखकर सूचित करें कि आपके प्रश्न–पत्र कैसे हुए।